आचार्य वीरनन्दि

जीवन-परिचय : आचार्य वीरनन्दि मेघचन्द्र त्रैविद्य देव के शिष्य थे। वे अपने समय के अच्छे विद्वान थे। कहा है—आचार्य वीरनन्दि चतुरता रूपी लक्ष्मी के स्वामी हैं, अनुपम गुणों से अलंकृत हैं, सिद्धान्त शास्त्रों को जाननेवाले विद्वानों में श्रेष्ठ हैं और पृथ्वी-मंडल के लोगों को इच्छित फल देनेवाले उत्तम चिन्तामणि हैं।

आचार्य वीरनन्दि का समय विक्रम की 12वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और 13वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है।

रचना-परिचय : आचार्य वीरनन्दि द्वारा रचित एक ही ग्रन्थ उपलब्ध है।

1. आचारसार : 'आचारसार' संस्कृत भाषा का एक अपूर्व ग्रन्थ है। इसमें 'मूलाचार' ग्रन्थ के समान मुनियों की क्रियाओं का, उनके आचार-विचार का वर्णन किया गया है। साथ ही अन्य आवश्यक विषयों का भी समावेश किया गया है। इस ग्रन्थ में 12 अधिकार हैं। इस ग्रन्थ पर आचार्य वीरनन्दि ने स्वयं एक कन्नड़ टीका भी लिखी है, जो अभी प्रकाशित नहीं हुई है।